Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

सुधा अरोडा के कहानियों में स्त्री चरित्र

डॉ. शेख मोहसीन शेख रशीद

सहयोगी अध्यायक, हिंदी विभाग, कला महाविद्यालय, बिडकीन, तह. पैठण, जि. छ. संभाजीनगर, महाराष्ट्र, भारत

Corresponding Author: * डॉ. शेख मोहसीन शेख रशीद

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.22658161

सारांश

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली प्रमुख लेखिकाओं में सुधा अरोड़ा का महत्वपूर्ण स्थान है। उनके साहित्य में समकालीन भारतीय स्त्री के सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, मानसिक, भावनात्मक, राजनीतिक तथा सांप्रदायिक जीवन की विविध स्थितियों का यथार्थपरक चित्रण मिलता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में सुधा अरोड़ा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ-साथ उनके साहित्य में उपस्थित स्त्री चरित्रों का विश्लेषण किया गया है। उनकी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से पितृसत्तात्मक व्यवस्था, स्त्री-शोषण, पारिवारिक असमानता, वैवाहिक तनाव, तलाक, घरेलू दायित्व, भावनात्मक उपेक्षा, सामाजिक रूढ़ियों तथा स्त्री की अस्मिता जैसे प्रश्नों को रेखांकित किया गया है। 'मरी हुई चीज', 'बगैर तराशे हुए', 'दमनचक्र', 'युद्धविराम', 'महानगर की मैथिली', 'रहोगी तुम वही', 'काला शुक्रवार', 'यथास्थिति', 'नमक' और 'आधी आबादी' जैसी रचनाओं में स्त्री जीवन के विविध संघर्षों और अंतर्विरोधों को अभिव्यक्ति मिली है। सुधा अरोड़ा की स्त्री पात्र केवल पीड़ित अथवा शोषित रूप में प्रस्तुत नहीं होतीं, बल्कि वे परिस्थितियों से संघर्ष करने वाली, आत्मसम्मान और अस्तित्व की खोज करने वाली चेतनाशील स्त्रियों के रूप में भी सामने आती हैं। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि लेखिका ने सामान्य भारतीय स्त्री के जीवनानुभवों को संवेदनशीलता और बेबाकी के साथ प्रस्तुत करते हुए स्त्री विमर्श को सामाजिक यथार्थ से जोड़ा है। इस प्रकार, सुधा अरोड़ा का साहित्य समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री-अस्मिता, संघर्ष, चेतना और मुक्ति की प्रभावशाली अभिव्यक्ति के रूप में महत्वपूर्ण है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 10-05-2026
- **Accepted:** 28-06-2026
- **Published:** 30-06-2026
- **IJCRM:**4(6); 2026: 295-297
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

रशीद शे. मो. शे. सुधा अरोडा के कहानियों में स्त्री चरित्र. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(6):295-297.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

मूल शब्द: सुधा अरोड़ा, स्त्री विमर्श, स्त्री अस्मिता, नारी चेतना, पितृसत्ता, स्त्री संघर्ष, सामाजिक यथार्थ, हिंदी कहानी, नारी मुक्ति, स्त्री चरित्र।

© 2026 डॉ. शेख मोहसीन शेख रशीद. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

सत्तर के दशक के चर्चित उपन्यासकारों में सुधा अरोडा का नाम जाना-पहचाना और चर्चित नाम है। उन्होंने कथा, काव्य, उपन्यास, एकांकी, अनुवाद लेखन के साथ तकरीबन सभी विधाओं में लेखन कार्य किया। सुधाजीने अपने लेखन में समाज के हर एक वर्ग को उजागर करने का प्रयत्न करते हुए खासकर स्त्रियों के असंख्य समस्याओं को अपनी कलम से रेखांकित किया है। वह स्त्रियों पर किये जानेवाले तकरीबन सभी अन्याय-अत्याचारों के विविध रूप दर्शाते हुए स्त्रियों में अंतरविरोध के साथ साहसभरी लढाई लढने का प्रण करवाते दिखाई देती है। यही नारीमुक्ति की लढाई अन्य कहानी लेखिकाओं की भी है।

बाल अवस्था से ही सुधा अरोडा ने कविताएँ लिखना आरंभ किया था। उनकी प्रथम कहानी 'मरी हुई चीज' सन् 1965 में 'ज्ञानोदय' पत्रिका में प्रकाशित हुई। उक्त कहानी को अत्यधिक सराया गया। इसके बाद उन्होने पलटकर नहीं देखा। उनकी साहित्यिक उपलब्धी इस बात में निहित है की उनकी कई कहानियों पर टी.व्ही. सिरियल बनी तथा उन्होंने 'बवंडर' नामसे हिंदी फिल्म का लेखन कार्य भी किया। साहित्यिक प्रतिभा की धनी सुधा अरोडा के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व पर निम्न प्रकार से प्रकाश डाला जा सकता है।

सुधा अरोडा का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व :

सुधा अरोडा का जन्म 4 अक्तुबर 1946 को लाहौर में हुआ। स्वतंत्रता के बाद लाहौर शहर पाकिस्तान के हिस्से में चला गया, तब सुधा अरोडा का परिवार कलकत्ता रहने चला गया। प्राथमिक पाठशाला से उन्होंने पढाई शुरू की। व्यक्तिगत बात कहे तो वह बचपन में काफी बिमार रहती थी। सुधाजी के पिता के साथ राजेंद्र यादवजी की दोस्ती थी। वह कलकत्ता में छोटी-मोटी कविताएँ लिखती थी। सुशिक्षित परिवार में बढ़ती सुधा अपने दादा-दादी की लाडली थी। पिता भी अच्छे व्यवसायी थे। सुधाजी ने पीएच.डी. तक की शिक्षा प्राप्त की है। उनके पती का नाम श्री. जितेंद्र भाटिया है वे भी सुधाजी की तरह एक लेखक है। जितेंद्रजी के साथ सुधाजी कलकत्ता से मुंबई रहने चली गयी। वहाँ रहते हुए उन्होंने दो लडकीयों को जन्म दिया। एक का नाम था 'गरिमा' और दूसरी का 'गुंजन' अब दोनों भी लडकीया विवाहोपरांत खुशहाल जीवन बिता रही है।

बचपन से साहित्य लेखन का कार्य करनेवाली लेखिका सुधा अरोडा का जीवन विवाहोपरांत थोडा बदल गया। वह चाहकर भी उतनी रचनाएँ नहीं कर पायी, जितना वह चाहती थी या लिख सकती थीं क्योंकि पारिवारिक कार्य में वह बहुत अधिक मग्न हो गयी थी। फिर भी वह उनकी कुछ कहानियों द्वारा अपनी लेखनिक प्रतिभा का प्रदर्शन भी करती रही। इन छोटी-मोटी कहानियों को इतना सराया गया की उन्हे अनेक सम्मानों से नवाजा गया। इस समय लिखी उनकी कहानियाँ 'दमनचक्र', 'सात सौ काटे', 'तेरहवे माले से जिन्दगी तथा 'युद्ध विरामने' प्रसिद्धी की सभी सोपानो को पार कर दिया।'

सुधा अरोडाजी का कृतित्त्व :

सुधाजी की प्रथम कहानी - 'मरी हुई चीज' पत्रिका ज्ञानोदय से प्रसिद्ध हुई। सफल कहानी के तत्व भी तब सुधाजी को पता नहीं थे पर फिर भी उन्होंने लिखी प्रथम कहानी को बहुत अधिक प्रसिद्धी मिली, इसीकारण वह प्रोत्साहित हुई और उन्होंने लेखन कार्य शुरू कर दिया। सुधाजी ने स्त्री विमर्श को अपने लेखन का केंद्र प्रथम कहानी से ही बना दिया। स्त्रीयों की त्रासदी का केंद्र उन्होंने पितृसत्ताक पारिवारीक व्यवस्था को माना है। उनके कुल आठ कहानी संग्रह प्रसिद्ध है। जिसमें प्रथम है -

1. 'बगैर तराशे हुए' - 1967 में प्रकाशित कहानी संग्रह में 'मरी हुई चीज' एक सेंटीमेंटल डायरी की मौत, डर, स्टेपलर अविवाहित पृष्ठ, निर्मम, चरित्रहीन, आग, घर, बगैर तराशे हुए आदि कहानियाँ संकलित है।
2. युद्धविराम - 1977 में प्रकाशित युद्धविराम कहानी संग्रह में 'युद्धविराम', 'तानाशाही', 'झुलसा हुआ शहर', 'दमनचक्र', 'पति परमेश्वर', बसवा आदि कहानियाँ व्याप्त है।
3. महानगर की मैथिली - 1987 में प्रकाशित कृतिय कहानी संग्रह में कुल 09 कहानियाँ प्रकाशित हुई।
4. काला शुक्रवार - यह कहानी संग्रह 2004 में प्रकाशित हुआ। इस कहानी संग्रह में 15 कहानियाँ संकलित है।
5. कांसे का गिलास - सन 2004 में प्रकाशित कहानी संग्रह में कुल 7 कहानियाँ प्रकाशित है।
6. मेरी तेरह कहानियाँ - 2005 में प्रकाशित इस कहानी संग्रह में कुल 13 कहानियाँ संकलित है। यह कहानियाँ अन्य कहानी संग्रह में भी प्रकाशित है पर 'फिर' भी 13 विशिष्ठ कहानियों को एकत्र करणे का प्रयास लेखिकाने इस माध्यम से किया है।
7. रहोगी तुम वही - 2007 में प्रकाशित 'रहोगी तुम वही' कहानी के साथ कुल 17 कहानियाँ संकलित है।
8. एक औरत : तीन बटा चार - 2011 में प्रकाशित यह कहानी संग्रह में कुल 15 कहानियों संकलित है।

सुधा अरोडाने 8 कहानी संग्रह के साथ यही कही था घर (2010) उपन्यास लिखा साथ ही यह रास्ता उसी अस्पताल को जाता है, स्त्री विमर्श : आम औरत : जिन्दा सवाल - 2008 में लिखे उपन्यास 5 भागों में विभाजीत है, सांकल अपने और सवाल - 2018 में प्रकाशित उपन्यास उन्होंने लिखे है। कहानी संग्रह, उपन्यास के साथ उन्होंने साक्षात्कार दिये साथ ही एकांकी संग्रह को संपादित किया और साहित्य का अनुवाद भी किया। स्तंभ लेखन कार्य, आत्मकथा, गुमशुदा की तलाश लिखी साथ डायरी लिखना उनका शौक रहा है।

सुधा अरोडा जी के साहित्य में स्त्री चरित्र :

सुधा अरोडाने अपने साहित्यिक विधाओं में स्थान समाज के हर एक कोने को प्रकाशित करने का काम किया पर उनके साहित्य के केंद्र में स्त्री और केवल स्त्री विमर्श ही दिखाई देता है। उन्होने पुरूषप्रधान सामाजिक व्यवस्था का प्रखर विरोध किया है। सामाजिक व्यवस्था के विरोध में ढाढ़स से लिखती सुधाजी ने स्त्रीयों की त्रासदी को वाणी देते हुए स्त्री विमर्श को रेखांकित किया है। यह लेखन देखा हुआ नही तो भोगा हुआ भी है। सुधाजी एक जगह खुद लिखती है 'एक पुरूष के लिए नहीं घर सुविधाओं की शरणस्थली होता है, साथ ही रूआब जताने, शासन और नियंत्रण करने की जमीन वहाँ एक औरत के लिए जिम्मेदारी निभाने का मुकाम और भावात्मक जुडाव का संबल। घर परिवार के लिए वह अपना अस्तित्व होम कर डालती है और इसका उसे कोई मलाल नहीं होता क्योंकि घर उसकी प्राथमिकता होती है। यहाँ लेखिका ने स्त्री की जिम्मेवारी का चित्रण करते वक्त यह अहसास किया की, स्त्रीयाँ अपनी जिम्मेदारी को अच्छे से निभाती है और शायद

© 2026 डॉ. शेख मोहसीन शेख रशीद. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

इसीमें अपना अस्तित्व भी ढूंढती है। 'महानगर की मैथिली' कहानी की नायिका 'चित्रा' नौकरी पेशा स्त्री है। वह नौकरी करती हुई भी अपने घरेलु कामकाज का बोझ उठाती है। उनही अन्य कहानी 'रहोगी तुम वही' कहानी में पुरूषप्रधान परिवार का चित्रण है। मुंबई के सांप्रदायिक दंगो में बच-बचाकर आयी पत्नी का पति स्वागत नही करता बल्कि उसे फिर एक ऐसा एडवेंचर्स नहीं करने की सलाह पती 'काला शुक्रवार' कहानी में देता है। उनके 'दमनचक्र' कहानी में भाई बहन के पवित्र रिश्ते का चित्रण सुधाजीने किया है। घर में बड़ी बहन के जो अपने पिता और छोटे भाई का लालन-पालन करती है। भाई का व्यवहार बहन के साथ अच्छा नहीं हैं क्योंकि भाई की संगत आवारा दोस्तों के साथ है पर फिर भी बहन भाई के जिद को पुरा करती है। 'तारा बाई चौल, कमरा नम्बर एक सौ सैतीस' में अमानवीय कृत्य करता पति जब दुर्घटना में मर जाता है फिर भी ताराबाई आनंद नहीं तो दुःख व्यक्त करती है क्योंकि वह भावनिक धरातल पर अपने पति और परिवार से एकलाप हो चुकी है। वह एकांत में पति को याद करते हुए शोक मनाती है। 'यथास्थिती' कहानी में पति के रूआब से पराजित स्त्री का चित्रण देखने को मिलता है। पति की बाहर भी कोई प्रेमिका है यह ज्ञान होने पर भी पत्नी उसका विरोध नहीं करती। वह 'यथास्थिती' अपने घर में रहना चाहती है। 'नमक' कुछ ऐसी ही कहानी है जिसमें 'नमक' का खाने में डालने में भुल से रह जाने के प्रसंग से पति कुछ जादा ही अस्वभाविक हो जाता है और पत्नि को तलाक देने तक की बात करता है, तब से पत्नी खाने की मेजपर नमक और काले मिर्च की पाउडर को रखना नहीं भुलती। यह विवाह के 30 वर्ष बित जाने पर भी कायम रहता है।

'बगैर तराशे हुए' कहानी में प्रेमी अपनी प्रेमिका पर शक करता है और चाहता है की वह केवल उससे आत्मिक भाव रखे, वह खुद को घड़ा हुआ (याने तराशा हुआ) समझता है और पत्नि को बगैर तराशी हुई। 'आधी आबादी' कहानी में लेखिका स्त्री के पारिवारिक समर्पण भाव के मुद्दे को उठाती है। 'अन्नपूर्णा मंडल की आखिरी चिठ्ठी' कहानी में प्रेमिका ने स्त्री का गर्भधारणा विरोध का चित्रण किया है क्योंकि वह ही नही चाहती की माँ बनकर हमेशा दोयम स्थान पर बनी रहे।

लेखिकाने तलाक और खुले की कहानियों द्वारा भी स्त्रीयों की मनोदशा को रेखांकित करने का प्रयत्न किया। उनकी 'स्वप्नजीवी' और 'इस्पात' कहानियाँ प्रमुख है। तलाक शुदा स्त्री की मनोदशा का चित्रण करते वक्त लेखिका यह महसूस कराती है की पति तो दूसरा विवाह कर लेता है पर पत्नी उसी के नाम पर बैठी रहती है। वह अपने समर्पित भाव तथा स्त्री की भावनाओं को दर्शाती है। 'पीले पत्ते' कहानी में तलाक शुदा स्त्री की मानसिक स्थिती का बिघडना और इस स्थिति से उसके लड़की का विवाह नहीं करने की स्थिति का चित्रण लेखिका करती है। 'बोलो भ्रष्टाचार की जय' कहानी में लेखिकाने भ्रष्टाचार के खिलाफ बोलने वाली स्त्री को आखिर इस्तीफा देने पर मजबुर किया जाता है, इस बात का चित्रण किया है। युद्ध विराम कहानी में वृद्ध की पत्नी के मृत्यु का चित्रण है जिससे वृद्ध को काफी चोट पहुंचती है क्योंकि घर में उसका ख्याल रखनेवाली केवल उसकी पत्नी थी जो अब चल बसी है, अब उसका क्या होगा वही चिंता उसे खाई जा रही होती है। सुधाजी की 'स्टेप्लर' कहानी में अनचाही घटनाएँ जो अभी के प्रसंग के साथ जोडी-जाती है इसका चित्रण है।

निष्कर्ष

सुधा अरोडा का साहित्य स्त्री विमर्श के प्रसंगों को उजागर करने में सफलता का हर सोपान पार कर गया है। सुधाजी ने स्त्री के हर एक पहलु को बखुबी घडते हुए स्त्री की मानसिक, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और साम्प्रदायिक स्थिती का चित्रण बखुबी किया है। सुधाजी के साहित्य में विषय वैविध्य की झांकी दिखाई देती है। स्त्री को बेटी, बहन, पत्नि, माँ, सास, बहु इन सारे चरित्र को उभारकर स्त्री की वास्तविकता को उन्होंने पाठक के सम्मुख पेश किया है। खासतौर पर स्त्री की मानसिक या भावनिक संघर्ष कि स्थिती में भी कर्तव्य पथपर कार्यरत रहने के प्रसंग को दर्शाते हुए चरित्र का उद्घाटन करना लेखिका की विशेषता रही है। वह में पलायन के प्रसंग को टाकते हुए स्त्री में धैर्य और सब्र के बिंदुओं को एकत्र कर समसामायिक समस्याओं से मुक संघर्ष करवाते दिखाई देती है। सुधा अरोडा ने आम भारतीय सम-सामायिक स्त्री के चरित्र को बेबाकी से वास्तविकता के कसौटी पर निश्चत ही खड़ा किया है।

संदर्भ सूची

1. सरल मनमोहन, संपादक। मनस्वी विशेषांक।
2. अरोड़ा सुधा। एक औरत की नोटबुक।
3. अरोड़ा सुधा। मरी हुई चीज।
4. अरोड़ा सुधा। बगैर तराशे हुए।
5. अरोड़ा सुधा। तानाशाही।
6. व्यास रामकृष्ण। आधुनिक हिंदी साहित्य।
7. पांडेय गंगाप्रसाद। आधुनिक कथा साहित्य।
8. वर्मा महादेवी। श्रृंखला की कड़ियाँ।

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the Author

डॉ. शेख मोहसिन शेख रशीद कला महाविद्यालय, बिडकीन, पैठण, छत्रपति संभाजीनगर, महाराष्ट्र में हिंदी विभाग के सहयोगी अध्यापक हैं। वे हिंदी भाषा एवं साहित्य के अध्यापन और शोध से जुड़े हैं। उनका शैक्षणिक कार्य विद्यार्थियों में भाषाई दक्षता, साहित्यिक समझ, आलोचनात्मक चिंतन तथा शोध अभिरुचि विकसित करने पर केंद्रित है।

© 2026 डॉ. शेख मोहसीन शेख रशीद. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/